प्राक्कथन

मोहन राकेश , आधुनिक हिंदी साहित्य के बहुचर्चित एवं विवादास्पद व्यक्ति रहे हैं । उनके साहित्य की तरह उनका जीवन भी विवादों का विषय रहा है । उनके दोस्तों ने उसे पढ़ने से ज्यादा गढ़ने का प्रयत्न किया है, तो उनके विरोधियों ने उनके व्यक्तिगत जीवन के छिद्रों को उनकी रचनाओं में देखने का प्रयास किया है । राकेश जी का रचना संसार, एक ईमानदार लेखक की सहज अभिव्यक्ति है । जिसमें वे अपने अंतर और बाह्य में सामंजस्य बिठाने के प्रयत्न में भटकते नजर आते हैं । कहानीकार के रूप में राकेश जी, हिंदी [redacted] कहानी के सशक्त हस्ताक्षर माने जा सकते हैं ।

मोहन राकेश जी को पढ़ने का मौका एम.ए.की पढाई के दौरान आया था । उनका ' लहरों के राजहंस ' नाटक पढ़कर मैं उनकी ओर आकर्षित हो गया और मैंने उनका थोड़ा बहुत साहित्य पढ़ लिया । परिणामत: मेरे मन में उनपर शोध-कार्य करने की इच्छा जागृत हुई । तभी एम. फिल्.के लघु-शोध प्रबन्ध के सिलसिले में उनपर शोध-कार्य करने का मौका प्राप्त हुआ ।

प्रस्तुत प्रबन्ध ' मोहन राकेश की कहानियों में आधुनिकता ' में राकेश जी की कहानियों का अनुशीलन आधुनिकता के संदर्भ में किया गया है । प्रबन्ध के प्रारंभ में कुछ प्रश्न मन में उठ खड़े हुए, वे प्रश्न थे ---

(१) आधुनिकता का अर्थ क्या है ?
(२) आधुनिकता से तात्पर्य क्या है ?
(३) आधुनिकता मूल्य है या प्रक्रिया ?
(४) आधुनिकता का स्वरूप एवं व्याप्ति क्या है ?
(५) मोहन राकेश जी की कहानियों में आधुनिकता किन किन संदर्भों में विद्यमान है ?

इन सवालों का हल ढूँढने के लिए मैंने मोहन राकेश जी की कहानियों में आधुनिकता का अनुशीलन करने का प्रयत्न किया है ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध पाँच अध्यायों में विभाजित है ।

प्रस्तुत प्रबन्ध के प्रथम अध्याय में मोहन राकेश जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर संक्षेप में विचार किया गया है । किसी भी व्यक्ति की जीवन दृष्टि उसके अपने भोगे हुए जीवन की यथार्थ उपज होती है । राकेश जी का जीवन और लेखन एक-दूसरे के पर्याय है । राकेश जी के व्यक्तित्व निर्माण में घर-परिवार, मित्र आदि का भी योगदान रहा , उसे इसमें देखा गया है । उनके साहित्यिक कृतित्व उनके संपूर्ण रचनासंसार पर सरसरी नजर डाली गयी है । उन्होंने अपने समय और जीवन के प्रत्येक क्षण, प्रत्येक स्थिति और प्रत्येक धड़कन को निजी आंतरिक दृष्टि से पहचाना है एवं उसे सही एवं सार्थक अभिव्यक्ति प्रदान की है ।

द्वितीय अध्याय में आधुनिकता का अर्थ, स्वरूप एवं व्याप्ति पर विचार किया गया है । आधुनिकता साहित्य एवं साहित्येत्तर क्षेत्रों में एक विवादास्पद संकल्पना के रूप में रही है । आधुनिकता का परिणाम, मनुष्य की संवेदनशीलता, उसकी विचार-प्रक्रिया तथा दृष्टि कोण पर होता है । यह अपने आप में एक अविश्लेषणीय एवं अमूर्त संकल्पना है । इस अमूर्त संकल्पना को इस अध्याय में सैद्धान्तिक-परिभाषा स्वरूप, व्याप्ति - स्तर पर समझने की कोशिश की गयी है ।

तृतीय अध्याय में हिंदी कहानियों में आधुनिकता का संक्षेप में विवेचन किया गया हैं । आधुनिकता की दृष्टि से ही कहानी मे परिवर्तन आया और परम्परागत कहानी का ढाँचा टूट गया । हिंदी कहानी में आधुनिक कहानी का प्रारंभ प्रेमचंद से माना जाता हैं । परंतु सही माने में सन १९५० सेही आधुनिक परिवेश की कहानियाँ आरंभ होती हैं । इस अध्याय में तीन कालखंडों में हिंदी कहानी की आधुनिकता को विभाजित किया गया हैं । छठे दशक की कहानी, सातवें दशक की कहानी और आठवें दशक की कहानी में आधुनिकता पर संक्षिप्त विवेचन किया गया हैं ।

चतुर्थ अध्याय में मोहन राकेश की कहानियों में आधुनिकता का विस्तृत विवेचन किया गया हैं । हिन्दी कहानी की आधुनिकता मानव- केन्द्रीत हैं । वह नि:संशय मनुष्य से जुड़ी हुयी हैं, न कि किसी वाद या संप्रदाय से । मोहन राकेश जी के कहानियों मे आधुनिकता सामाजिक,धार्मिक,आर्थिक,राजनीतिक संदर्भों में परखी गयी हैं । प्रस्तुत अध्याय में मोहन राकेशजी की अधिकांश कहानियों का इन्हीं संदर्भों में मूल्यांकन किया गया हैं ।

पंचम अध्याय में उपसंहार । यह प्रबन्ध के विषाय का सार-रूप हैं । इस में आधुनिकता के संदर्भ में राकेश की कहानियों का संक्षिप्त विवेचन एवं निष्कर्ष प्रस्तुत किया हैं ।

प्रबन्ध के अंत में परिशिष्ट दिया गया हैं । परिशिष्ट के पूर्वार्ध्द में मोहन राकेश जी की रचनाओं की सूची दी गयी हैं । साथ ही में प्रत्येक पुस्तक का प्रकाशक एवं संस्करण भी दिया गया हैं । परिशिष्ट के उत्तरार्ध्द में सहायक संदर्भ ग्रंन्थो की सूची दी गयी हैं । वे ग्रंथ, कोश एवं पत्रिकाएँ, जो विषाय विश्लेषाण की आधारशिला बन सके हैं । साथ में प्रत्येक ग्रंथ का प्रकाशक एवं संस्करण भी दिया गया हैं ।

इस लघु शोध-प्रबन्ध की पूर्ति में मेरी प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष सहायता करनेवाले तथा प्रोत्साहित करनेवाले हित चिंतकों के प्रति कृतज्ञता-भाव प्रकट करना मेरा प्रथम कर्तव्य है ।

जीवन में कुछ ऋण ऐसे होते हैं, जिनसे उऋण होना संभव नहीं होता और न उऋण होने की इच्छा ही होती है । इसी तरह का ऋण मुझ पर है - श्रध्देय गुरुवर्य डॉ. के.पी.शहा जी की कृपा का । प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध डॉ.के.पी.शहा जी के आशीर्वाद एवं कृपा पूर्ण सक्षम निर्देशन में लिखा गया है । इसे मैं अपना सौभाग्य समझता हूँ । सातत्यपूर्ण व्यस्तता के बावजूद आपने निरंतर प्रोत्साहन एवं प्रेरणा देकर मेरी अत्यंत सहायता की है । इस शोध विषाय के बारे में जब जब संभ्रम निर्माण हुआ, तब तब आपने मुझे हतोत्साह होने नहीं दिया । आपके आत्मीयपूर्ण निर्देशन ने इस शोध-कार्य के अंतर्गत आनेवाली कठिनाइयों को कभी अनुभव नहीं होने दिया, बल्कि हर बार मुझे नया उत्साह मिलता गया । आपकी इस सहृदयता को आभार के चन्द लब्जों में बाँधकर मैं सीमित नहीं करना चाहता परंतु यह बात निश्चित है कि, आपकी इस कृपा का एहसास मुझे हमेशा रहेगा । इस कार्य के दौरान आपसे मुझे जो स्नेह, प्रेरणा और आत्मीयता मिली, वह आजीवन भुलायी नहीं जा सकती । आपके इसी स्नेह, प्रेरणा और आशीर्वाद का मैं सदैव अभिलाषी रहूँगा ।

आदरणीय गुरुवर्य डॉ.व्ही.के. मोरे, डॉ.व्ही.व्ही.द्रवीड, प्रा.एस.बी. कणाबरकर, प्रा.आय.एम.मुजावर, प्रा.वेदपाठक, प्रा.तिवले, प्रा. हिरेमठ, प्रा.भागवत जी का आशिर्वाद मेरे साथ रहा, उनके प्रति सविनय आभार प्रकट करता हूँ ।

माता-पिता, स्नेह निर्झर एवं मित्रों का आभारी हूँ, जिनकी शुभकामनाएँ मेरे साथ थी । प्रा.एन.आर.रानभरे जी का भी आभारी हूँ, जिन्होंने सामग्री-संकलन आदि में निस्वार्थ सहयोग दिया । प्रा.एस.एच.कांबळे जी की सहायता का भी आभारी हूँ ।

शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रंथालय के प्रति विशेषत: ग्रंथपाल डॉ. जे.बी.जाधव जी, असि. सिनियर लायब्ररीयन श्री. निशीकांत गुरव जी तथा क्लार्क श्री. विलास ज्ञानदेव भोसले जी की सहायता के प्रति आभारी हूँ ।

अंत में इस शोध प्रबन्ध को अतिशीघ्र एवं सुचारु रूप से टंकलिखित रूप देने का काम श्रीयुत बाळकृष्ण रा.सावंत जी ने किया तथा प्रबन्ध को जिल्दसाज चढाने का काम श्री. प्रविण दि. कशाळकर जी ने बड़ी आत्मियता से किया, इनके प्रति भी आभार प्रकट करता हूँ ।

इसके साथ ही मैं अपना यह लघु शोध-प्रबन्ध अत्यंत विनम्रता के साथ आपके अवलोकन के लिए सम्मुख रखता हूँ ।

आपका कृपापार्थी

(मारुफ समशेर मुजावर)
शोध-छात्र

कोल्हापुर ।
दिनांक : 05 : 3 : १९९० ।